लिए मानव स्वतंत्र है। संभववादियों के लिए पृथ्वी और उसका प्रभाव नहीं, वरन् मानव का कार्य आरंभ बिन्दु है जिसमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है मानव की चयन करने की स्वतंत्रता।'' मानव के विकास एवं उसके क्रियाकलाप को महत्त्व देते हुए विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने इस संबंध में अपने-अपने मत प्रस्तुत किये हैं :-

फ्रेबे (Febvre) ने सर्वप्रथम मानव के विकास को पूर्ण महत्ता देते हुए नियतिवादियों की तरह मानव को प्रकृति का दास मानने से इंकार करते हुए बताया कि मानव एक क्रियाशील प्राणी है उसके लिए कई संभावनाएँ निहित रहती हैं वह उनमें स्वेच्छापूर्वक चयन की सुविधा रखता है। उसने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'इतिहास की भौगोलिक प्रस्तावना' में स्थान-स्थान पर उदाहरण सहित कई महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किये। उनके अनुसार ''मनुष्य एक भौगोलिक दूत है, पशु नहीं है, वह सर्वत्र पृथ्वी की रचना की विवेचना में एवं उनके परिवर्तनशील भौगोलिक तत्त्वों की अभिव्यक्तियों के संबंध ढूँढ़ने में जोर देता है। ऐसे तथ्यों का अध्ययन करना भूगोल का महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। उन्होंने आगे बताया : There are no necessities, but everywhere possibilities and man as a master of these possibilities, is the judge of their use. This by the several which it involve puts man is the first place, and no longer the earth nor the influence of climate nor the determinist condition of location.

विडाल-डी-ला-ब्लाश (Vidal de la Blache) ने सम्भववादी विचारधारा को तथ्यात्मक व्याख्या प्रदान कर उसे नयी दिशा प्रदान की। वे यूरोप में प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography) के माने हुए भूगोलवेत्ता थे।

फ्रांस के भागों का अध्ययन करते हुए ब्लाश महोदय ने बताया कि औद्योगिक क्रांति के पश्चात् मानव ने अपनी सृजन शक्ति से प्रकृति की गतिशील शक्तियों जैसे-बहता जल, परिवहित मिट्टी, वनस्पति एवं स्थाई शक्तियों-धरातल, खनिज पदार्थ आदि का अपने हित में एवं तत्त्वों के आचरण के अनुसार उनका मानव उपयोग करता रहा है। इससे उसका विकास भी हुआ है। आज मानव ऐसे स्थानों पर कृषि कर रहा है जहाँ आज से पहले संभव नहीं था। इसके लिए उसने पौधों एवं पशुओं की कई नस्लें भी विकसित की है। एक स्थान पर तो ब्लाश (Blache) ने स्पष्टत: स्वीकार किया कि : 'Nature is not more than adviser.' जैसे-जैसे मानव का ज्ञान, विचार एवं सामाजिक कार्यों का विकास होता है, वैसे-वैसे पुराने तत्त्वों को नवीन महत्त्व प्रदान किया जाता है।

ब्लाश (Blache) प्रारम्भ में रेटजेल (Ratzel) के विचारों से प्रभावित अवश्य हुए, परन्तु ब्लाश (Blache) ने डनहें उसी रूप में कभी भी स्वीकार नहीं किया।

उन्होंने अपनी पुस्तक 'Principles of Human Geography में बताया कि निश्चयवाद का 20वीं शताब्दी के आरंभ के 20 वर्षों तक एकाधिकार रहा, परन्तु उसके बाद भूगोलवेत्ताओं ने भूगोल के अध्ययन में मानवीय पक्ष को शामिल किया जिसमें ''मानव द्वारा प्रकृति पर नियंत्रण'' अर्थात् मानव को अधिक प्रभावशाली बताया जिसे हम 'संभववाद' (Possibilism) के नाम से जानते हैं।

सर्वप्रथम फ्रेब्रे (Febvre) ने मानव के विकास को पूर्ण महत्ता देते हुए लिखा है कि "There are no necessites but everywhere possibilites and man as a master of these possibilities, is the

judge of their use. This by the reversal which it involve puts man is the first place, and no longer the earth nor the influence of climate nor the determinist condition of location."

Vidal de la Blache (विडाल डी-ला-ब्लाश ने भी मानव के सृजन शक्ति द्वारा बहता जल, मिट्टी, वनस्पतियों, धरातल, खनिज पदार्थ आदि को अपनी इच्छानुसार उपयोग एवं विकसित करता है। इस प्रकार ब्लॉश (Blache) महोदय तो एक स्थान पर स्वीकार करते हैं कि —'Nature is not more than adviser.' Blache में स्वीकार करते हैं कि-Principles of Human Geography वातावरण के कुछ तत्त्वों पर उसका (मानव का) नियंत्रण नहीं है तथा कुछ पर उसका नियंत्रण मिलता है। इस प्रकार मानव एक साथ क्रियाशील भी है और निष्क्रिय भी है।' 'Man is at once both active and passive.'

Raphy ने स्वीकार किया कि 'वातावरण के कुछ तत्त्वों पर उसका (मानव का) नियंत्रण नहीं है तथा कुछ पर उसका नियंत्रण मिलता है। इस प्रकार मानव एक साथ क्रियाशील भी है एवं निष्क्रिय भी है (Man is atonce both active and passive.)

ब्रूँस (Brunhes) नामक फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता ने भी माना कि मानव भूतल पर निवास करता है वह अपने परिवेश (वातावरण) में रहकर काम करता है, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वह वातावरण का दास है। उसने आगे बताया कि यद्यपि मनुष्य के कार्य कुछ सीमाओं में बँधे हें इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि उसकी क्रियाएँ पूर्णतया पूर्व नियंत्रित या पूर्व निश्चित हैं। उसने मनुष्य को कभी भी स्वीकार नहीं किया। उसने स्पष्टत:कहा कि - 'वह (मानव) पूर्णत: अकर्मण्य तभी होता है जब भौतिक विश्व (प्रकृति) उसे निष्प्राण कर देता है। वास्तव में, वह जब तक जीवित है क्रिया-प्रतिक्रिया करता रहता है।'

दूसरे शब्दों में प्राकृतिक शक्तियाँ एवं प्राकृतिक परिवेश का प्राकृतिक विश्व पर आधिपत्य है-मानव भूगोल समझौते का एक क्षेत्र है उसमें पृथ्वी पर मानवीय जीवों के लिए कुछ भी पूर्णता या स्थिरता नहीं है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मानव भूगोल' (Human Geography) के प्रारम्भिक पृष्ठों पर ही स्पष्टत: लिखा : 'Every thing around us is undergoing transformations, every thing increasing or diminishing. NOthing is really motionless or unchanging (static).'

डिजामियाँ (Demangeon) ने मानव भूगोल को 'मानव कार्यों तथा समाज के भौतिक वातावरण के संबंधों का अध्ययन' माना है। उन्होंने मानव द्वारा वातावरण में संशोधन (Modification) पर भी बल दिया। उन्होंने बताया कि मानव ने संचार साधनों का विकास कर, पाताल-तोड़ कुएँ खोदकर, नदियों पर नियंत्रण पाकर एवं मानवीय भोजन के लिए नये पौधों के विकास पर परिवेश (वातावरण) में परिवर्तन किया है। उन्होंने इस प्रकार निश्चयवाद को स्पष्टत: अस्वीकृत किया।

दो अन्य भूगोलवेत्ताओं किरचॉफ एवं ब्लैचार्ड ने भी सम्भववाद का विशेष प्रमाणों एवं तथ्यों के आधार पर समर्थन किया। किरचॉफ ने बताया कि मानव ऐसी मशीन नहीं जिसकी कोई अपनी इच्छा नहीं है। परन्तु किरचॉफ ने कई स्थानों पर प्रकृति के प्रभाव को भी स्वीकार किया। इसी भाँति ब्लैंचार्ड ने भी नगरीय भूगोल के विधितंत्र पर शोध लेख एवं वर्णन प्रस्तुत करते हुए मानवीय प्रभावों को बहुत महत्त्व दिया। संभववाद का अधिक स्वीकार विचार सॉअर (Saver) के द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भूगोलवेत्ताओं का कार्य प्राकृतिक से सांस्कृतिक भू-दृश्य के संक्रामी प्रकृति को खोजना और

समझना है। इस प्रकार के अभ्यास के द्वारा भूगोलवेत्ता विभिन्न मानव समूहों द्वारा अधिकार क्रम के परिणामस्वरूप जो परिवर्त्तन हुए उनकी पहचान कर सकेगा। इसका महत्व प्राय: उन प्रदेशों में अधिक होता है जिनमें यह पर्यानुकूलित किया गया उन प्रदेशों की अपेक्षा जहाँ यह विकसित किया गया और पालतू बनाया गया था। उदाहरण के लिए गेहूँ की प्रति एकड़ उपज उन प्रदेशों में जहाँ इसे सबसे पहले मानव के उपयोगी बनाया गया (दक्षिण पश्चिम एशिया) अधिक नहीं है। चावल की कृषि विशेषत: संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान और भारत में की जाती है जहाँ यह बाद में विसारित (Diffuse) हुआ।

1.5 आलोचना (Criticism)

यद्यपि सम्भववादियों ने अपने पक्ष मजबूत करने के लिए कई प्रभावशाली उदाहरण दिये हैं, किन्तु यह विचारधारा भी आलोचनाओं से मुक्त नहीं रह पाया। नियतिवादियों द्वारा खुलकर इस विचारधारा की आलोचना की गई है।

(i) यह विचारधारा भी निश्चयवाद की तरह एक एक पक्षीय है जिसमें प्राकृतिक तत्त्व की उपेक्षा करते हुए सिर्फ मानवीय तत्त्व की विवेचना की गई।

(ii) साथ ही संभववादियों के वक्तव्य में विरोधाभास भी है जो मानव को सर्व-शक्तिमान मानते हुए यह भी स्वहकार करते हैं कि प्रकाति मानव के लिए अवसर प्रदान करती है। उसके लिए योजना बनाती है तथा कार्य क्षेत्र के लिए सीमा का निर्धारण करती है।

दूसरी ओर मानव चाहे जितना भी वैज्ञानिक और तकनीकी विकास कर ले, परन्तु प्राकृतिक तत्त्व या भौतिक तत्त्व अभी भी उनके कार्यों पर नियंत्रण करती है। अर्थात् मानव उसके प्रकोप से बच नहीं सकता। जैसे-बाढ़, सूखा, महामारी, ज्वालामुखी, भूकम्प, सुनामी, तूफान, अकाल, भूस्खलन इत्यादि पर अभी भी मानव विजय प्राप्त नहीं कर सका।

उपर्युक्त आलोचनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भववाद विचारधारा का कोई महत्त्व नहीं, किन्तु फिर भी उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद मानव के क्रिया विधि द्वारा प्राकृतिक स्वरूप में परिवर्त्तन किया जा सकता है एवं मानव प्राकृतिक दशाओं के अनुकूल ही अपना जीवन बिताता है।

1.6 नव-निश्चयवाद (Neo-determinism)

यह निश्चयवाद (Neo-determinism) की अवधारणा ग्रिफिथ टेलर (Grififth Taylor) प्रस्तुत की थी। उन्होंने नियतिवाद तथा संभववाद के बीच का रास्ता अपनाया। उन्होंने भूगोल के एकात्मक चरित्र को ध्यान में रखते हुए बताया कि भूगोल को न तो नियतिवाद जैसा कठोर न ही संभववाद जैसा लचीला होना चाहिए, बल्कि दोनों के बीच मध्यम मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने ''रूको तथा जाओ निश्चयवाद'' (Stop and Go Determinism) का प्रतिपादन किया। इसे ही नव-निश्चयवाद (Neo-Determinism) भी कहते हैं। Taylor (टेलर) के अनुसार प्रकृति की अपनी सुन्दरता है तथा उसके अपने नियम भी है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह सर्वप्रथम रूककर समझे तथा उसके बाद विकास की योजनाएँ बनायें। Taylor (टेलर) के विचार का समर्थन अनेक विद्वानों ने किया जिसमें Tatham, Saver,

Roger Minshull, Wooldridge प्रमुख हैं। चूँकि उपर्युक्त समर्थक अधिकांशत: अमेरिकन तथा ब्रिटिश थे। अत: इस विचारधारा को American and British School of Geography' भी कहा जाता है।

ग्रिफिथ टेलर ने 1920 ई० में सर्वप्रथम प्रकाशित अपने बहुचर्चित ग्रन्थ 'आस्ट्रेलिया' में एवं बाद में 1951 में प्रकाशित 'बीसवीं सदी में भूगोल' (Geography in Twentieth Century) नामक दूसरे ग्रन्थ के सम्पादन में बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण विधि से स्थान-स्थान पर तर्क, उदाहरण एवं स्पष्टीकरण देते हुए अपने चिन्तन को सावधानीपूर्वक सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर जलवायु के तत्त्वों को अधिक निकटता से प्रस्तुत किया। उन्होंने एक ओर तो मानव की सृजन शक्ति को स्वीकार किया गया है तो दूसरी ओर प्राकृतिक प्रभाव से मानव को मुक्त नहीं माना। उनकी मान्यता रही है कि मानव प्राकृतिक परिवेश को अपनाकर, उसमें अपने को आत्मसात कर उससे सहयोग कर अपनी अनुकूलताओं का संवर्द्धन कर सकता है। उसने मानव के प्रभाव को स्वीकार करते हुए ये निर्देश दिया : 'मानव किसी देश के विकास को तीव्र धीरे कर सकता है, परन्तु यह बुद्धिमान है तो उसे भौतिक परिवेश द्वारा निर्देशित दिशा से दूर नहीं हटना चाहिए।'

आगे वह प्रकृति के प्रभाव एवं मानव के सहयोग को संक्षेप में, किन्तु बहुत ही प्रभावशाली शैली में लिखता है-'मनुष्य एक महानगर के चौराहे पर संचालक की भाँति है जो कि प्रवाह गति में परिवर्तन तो कर सकता है, परन्तु उसकी दिशा नहीं बदल सकता।'

"He (man) is like a traffic controller in a large city, who alters the rate but not the direction of the flow.")

टेलर ने सम्भववादियों की उन्मुक्त उड़ान को नियंत्रित करते हुए स्पष्ट किया कि मानव यदि कठोर श्रम एवं विशाल पूँजी खर्च करके यदि दक्षिणी ध्रुव पर थोड़े बहुत उष्ण-कटिबन्धीय पौधे लगा भी दे तो क्या यह व्यावहारिक होगा? इसी भाँति मरूस्थलीय प्रदेश के सीमित जल संसाधनों में क्या चावल पैदा करने की बात मूर्खतापूर्ण नहीं मानी जायेगी। उदाहरणार्थ, सीमित जल सुविधा के कारण ही जालोर जिले (पश्चिमी राजस्थान) के लूनी बेसिन में भी रबी के मौसम में पकने वाली ज्वार, गेहू, चना, मटर, तिलहन जैसी सीमित जल में पनपने वाली फसलें भी पैदा की जाती है। आज हम देखते हैं कि असीम सम्पत्ति खर्च करने के बाद भी सऊदी अरब एवं कुवैत अभी भी सीमित रूप से विकसित प्रदेश ही है। इसी तरह काफी वर्षों की आजादी के बाद भी पश्चिमी चीन का अर्द्ध-शुष्क प्रदेश आज भी प्राय: जनशून्य है। ठीक इसी तरह की स्थिति ध्रुवीय एवं अध्रुवीय प्रदेशों तथा ऊँचे पर्वतीय भागों की भी है। अत: भूतल पर नितान्त प्राकृतिक प्रतिकूलता वाले प्रदेश मानव के विकास के लिए आज भी प्रतिकूल क्षेत्र हैं।

लेकिन प्रकृति के नियंत्रण को स्बीकार करते हुए 'जब यह कश्मीर की वादियों में केसर (Safron) की खेती करता है एवं उनसे लगे हिमालय की ढलानों पर सेव, अखरोट, अंजीर, आदु आदि की खेती करता है तब सचमुच ही प्रकृति धरती के स्वर्ग के रूप में उसे उपहार स्वरूप नवाजती है एवं उसके साथ मृदुल व्यवहार करती है।

संभववादी विचारधारा के जनक फैब्रे (Fevre) ने भी सन् 1924 में अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'इतिहास की भौगोलिक प्रस्तावना (Geographical Introduction of History) ने स्वीकार किया है कि

मनुष्य अपने तमाम प्रयासां के बावजूद वातावरण के नियंत्रण से मुक्त नहीं हो सकता है। इसका समर्थन करते हुए स्कार्फ ने भी कहा है कि मानव का प्रकृति पर एक मुर्खतापूर्ण वक्तव्य है, तो प्रकृति का मानव पर नियंत्रण भी एक रहस्यास्पद उक्ति है। वैज्ञानिक कथन तो यह है कि मानव एवं प्रकृति में सामंजस्य, सहयोग एवं सहकार की स्थिति है।

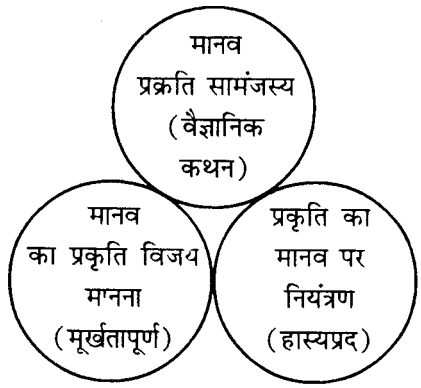

चित्र-1.1 : स्कार्फ के अनुसार नव-निश्चय के पोषक

भूगोलवेत्ता ओ० एच० स्पेट (O.H.K. Spate) ने 1953 में प्रकाशित पुस्तक Compass of Geography में टेलर के नव-निश्चयवाद के मध्यम मार्ग को 'प्रसंभाव्यवाद' (Probablism) का नाम दिया। उनके अनुसार प्राकृतिक वातावरण में अनेक संभावनाएँ उपस्थित रहती हैं। मनुष्य इनमें से वैसे ही संभावनाओं का चयन करता है जो अपेक्षाकृत उसके लिए अधिक संभाव्य रहती है। गैर मानवीय वातावरण के अन्तर्गत प्रो० स्टेप ने स्थलरूपी जलवायु, मिट्टियों, नदियों के अलावा खेतों, इमारतों, नहरों, सड़कों, रेलमार्गों एवं मशीनों को भी रखा है। कॉल शॉवर (Carl Saver) ने भी 1947 में प्रकाशित पुस्तक Cultural Geography में आधुनिक युग के निश्चयवाद (Present Day Determinism) का समर्थन करते हुए कहा कि प्रकृति एवं मानव के बीच समायोजन की भी प्रधानता होनी चाहिए।

जार्ज टेथम (George Tatham) ने 1917 ई० में नव निश्चयवाद को व्यावहारिक संभाव्यवाद (Progmatic Possibilism) कहा है, क्योंकि नव-निश्चयवाद, निश्चयवाद से कई मामले में भिन्न हैं, क्योंकि उसमें मानवीय चयनों का समावेश है, जबकि पुराने निश्चयवाद में इसकी गुंजाइश नहीं है।

अन्ततः निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि नव-निश्चयवाद की संकल्पना अपेक्षाकृत ज्यादा व्यावहारिक वैज्ञानिक है, क्योंकि इसके तहत प्रकृति एवं मानव को एक-दूसरे का शत्रु नहीं, अपितु पूरक माना गया है। अर्थात् मानवीय प्रगति एवं संपन्नता प्रकृति के साथ सहयोग एवं सहकार से ही विकसित हो सकती है, प्रकृति का विरोध करके नहीं। अन्यथा पर्यावरण असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और सम्पूर्ण मानव-सभ्यता के अस्तित्व पर खतरे उत्पन्न हो जाते हैं।

1.7 सारांश (Summing-up)

प्राचीन काल से भूगोल विषय के अन्तर्गत मानव एवं वातावरण (Man and Environment) का

अध्ययन होता आया है। निश्चयवादी विचारधारा के अनुसार-''मानव प्रकृति का दास है।'' अर्थात् मानव के जीवन शैली, समाज के समूह या राष्ट्र की विकास की अवस्थाएँ पूर्णरूप से पर्यावरण के भौतिक तत्त्वों से नियंत्रित होती है। इस विचारधारा को दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया गया है। प्रथम प्राचीन विचारधारा जिसमें ग्रीक एवं यूनानी भूगोलवेत्ताओं का स्थान आता है।

Hippocratus ने अपनी पुस्तक 'On Airs, Water and Places' में एशिया एवं यूरोप के लोगों की तुलना करते हुए बताया कि यूरोप के लोग ठण्डे प्रदेश के होने के कारण अधिक परिश्रमी जबकि एशिया के लोग कम परिश्रमी हैं।

Herodotas ने मिश्र की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के लिए नील (Nile) नदी को उत्तरदायी बताया।

Aristotle अरस्तु ने अपनी पुस्तक 'Politics' में Hippo के विचारों का समर्थन यूरोप एवं एशिया के Cratus लोगों के संदर्भ में किया है।

स्ट्रेबो (Strabo) ने अपनी पुस्तक 'भूगोल' (Geography) में प्राकृतिक वातावरण के विशेष प्रभाव एवं उनके प्रभाव से विकसित विशेष मानव एवं सांस्कृतिक रचनाओं के वितरण पर बुद्धिमत्तापूर्ण वर्णन प्रस्तुत किये।

16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जीन बोदिन (Jean Bodin) एवं मॉण्टेस्क्यू (Montesqueen) ने जलवायु के प्रभाव को विशेष व्यापक माना।

मध्यकालीन भूगोलवेत्ता जिसमें अल-मसूदी (Al-Masudi), इब्न हाकल (Ibn-Hawkle), अल इदरिसी (Al-Idrise), एवं इब्न खाल्दून (Ibn-Kaldun) ने भी बताया कि पर्यावरण से मानवीय क्रिया एवं उनकी जीवन शैली प्रभावित होती है।

18वीं और 19वीं सदी का काल जिसे नवयुग (Modern Age) कहते हैं अर्थात् आधुनिक निश्चयवाद विचारधारा को आगे बढ़ाने में जर्मन भूगोलवेत्ताओं ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की जिसमें इमेन्युअल काण्ट (Emmanual Kant), अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट (Alexander Von Humbolt), रिटर (Ritter), Friedrich Ratzel (रेटजेल) रेटजेल की शिष्या एलन चर्चिल सेम्पुल के नाम शामिल हैं। एलन चर्चिल ने अपनी पुस्तक 'Influences of Geographic Environment' (भौगोलिक वातावरण के प्रभाव) में लिखा है कि-''मनुष्य पृथ्वीतल की उपज है। इसका अभिप्राय केवल इतना ही नहीं है कि वह पृथ्वी की सन्तान है, उसकी धूल का कण है, किन्तु यह भी है कि पृथ्वी ने उसे मातृत्व दिया है, उसका पालन-पोषण किया है, उसके लिए कर्त्तव्य निश्चित किये, उसके विचारों को दिशा दी है, उसके सामने कठिनाईयाँ उत्पन्न की है जिससे उसके शरीर को बल मिला है, उसकी बुद्धि को प्रखर किया है; पृथ्वी ने उसे नौसंचालन अथवा सिंचाई की समस्याएँ दी हैं और साथ-ही-साथ उसके कान में समस्याओं का हल भी बतला दिया है। उसने उसकी हड्डियों और उत्तक में, उसके मस्तिष्क और आत्मा में प्रवेश किया है, पर्वतों पर चढ़ने के लिए उसे फौलादी मांसपेशियाँ प्रदान की है, तट के सहारे इन्हें कमजोर और ढ़ीला छोड़ दिया है, किन्तु इसके स्थान पर उसकी छाती और हाथों की शक्ति का पूर्ण विकास किया है जिससे वह अपने पतवारों को चला सके। नदी घाटियों में उसको उपजाऊ भूमि दी है .....।''

प्रसिद्ध अमेरिकी भूगोलवेत्ता एल्सवर्थ हंटिंगन ने अपनी पुस्तक 'Principles of Human Geography' में बताया कि विश्व की सभ्यताएँ वहाँ के जलवायु द्वारा नियंत्रित होती हैं। उसके बाद के भूगोलवेत्ताओं

में ईसा बोमन, मेकिण्डर, चिशोल्म, डेविस, हरबर्टसन, रोबर्टमिल आदि ने भी समाज की प्रगति को निश्चयवादी तथ्य के रूप में वर्णित किया।

डिमाजियां (Demangeon) ने तो मानव द्वारा वातावरण में संशोधन (Modification) की बात कही। उन्होंने मानव द्वारा विभिन्न प्रकार के विकास को गिनाया और निश्चयवाद को पूर्णत: अस्वीकृत किया।

अन्य भूगोलवेत्ता जिन्होंने सम्भववाद का समर्थन किया उसमें ब्रूस, किरचॉफ एवं ब्लैंचार्ड के नाम उल्लेखनीय हैं।

हम जानते हैं कि निश्चयवाद और संभववाद दोनों कठोर मार्ग को अपनाते हुए क्रमश: प्राकृतिक तथ्य और मानवीय पक्ष की एक पक्षीय विवेचना की है, परन्तु भूगोल के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत मानव और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। इसी तरह आज के वैज्ञानिक युग में न तो कठोर निश्चयवाद को ही माना जा सकता है न ही संभववाद को। अत: भूगोलवेत्ताओं ने दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए नई वैज्ञानिक विचारधारा का प्रतिपादन किया जिसे नव-निश्चयवाद (Neo-Determinism), वैज्ञानिक निश्चयवाद (Scientific Determinism) और रूको और जाओ (stop and go Determinism) के नाम से जाना जाता है।

इस विचारधारा का सर्वप्रथम प्रतिपादन ग्रीफिथ टेलर (Grififth Taylor) ने किया था और एक जगह पर वह कहते हैं कि—'He (man) is like a traffic controller in a large city, who alters the rate but not the direction of the flow."

इस विचारधारा का समर्थन अन्य भूगोलवेत्ताओं ने भी किया जिसमें ओ० एच० के० स्पेट, कार्ल सॉवर, स्कार्फ एवं जार्ज टेथम के नाम शामिल हैं।

1.8 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

Q.1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें-

(i) निश्चयवाद

(ii) संभववाद

(iii) नव-निश्चयवाद।

Q.2. निश्चयवाद/पर्यावरणवाद/नियतिवाद के विकास में किन्हीं चार विद्वानों के आधारभूत योगदान को विस्तार से समझाइए।

Q.3. 'कुमारी सेम्पल नियतिवाद की अग्रदूत मानी जाती है। इनके द्वारा प्रस्तुत विशेष विचारों को समझाते हुए इसे स्पष्ट कीजिए।

Q.4. 'वर्तमान के विश्व-परिवेश में कठोर नियतिवाद मात्र मिथ्या धारण बनकर रह गई है।' विस्तार से समझाइए।

Q.5. सम्भववाद के विकास एवं वर्तमान स्वरूप पर एक समालोचनात्मक निबन्ध लिखिए। नव-निश्चयवाद/'रूको व जाओ निश्चयवाद' क्या है?

Q.6. यह निश्चयवाद एवं सम्भववाद से किस प्रकार भिन्न है? उदाहरण देते हुए व्याख्या करें।

1.9 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) All Possible Worlds : James, P.E. and Mastein, G.

(2) Evolution of Geographical Thought : Husain, M.

(3) Geography in the Twentieth Century : Taylor, G.

(4) भौगोलिक विचारधारा का इतिहास : माजिद हुसैन

●●●

भूगोल में द्वैतवाद : भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल

(Dualism in Geography : Physical Geography vrs. Human Geography)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)

2.1 परिचय (Introduction)

2.2 भूगोल में द्वैतवाद : भौतिक बनाम मानव
(Dualism in Geography : (Physical vrs. Human)

2.3 सारांश (Summing up)

2.4 मॉडल प्रश्न (Model Question)

2.5 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह बताना है कि भूगोल में द्वैतवाद क्या है? तथा भूगोल में भौतिक बनाम मानव द्वैतवाद के बारे में भी जानकारी प्रदान करनी है।

2.1 परिचय (Introduction)

हमलोग सर्वप्रथम यह जानने की कोशिश करेंगे कि द्वैतवाद (Daulism) से तात्पर्य किसी विज्ञान या विषय विशेष की दो प्रकार के दृष्टिकोण को देखते हुए उसकी प्रधान शाखाओं अथवा उपागम को ही सम्पूर्ण विषय मानकर विषय को दो भागों या दो अर्द्धकों (Two halves) में बाँटना ही द्वैतवाद (Dualism) या द्वैधता (Dichotomy) कहलाता है।

वास्तव में इस तरह दो अर्द्धकों में विभाजन या बँटवारा विद्वानों के मस्तिष्क का अन्तर्द्वन्द्व ही कहा जा सकता है।

अनेक चुनौतियों के बावजूद भूगोल में यह द्वैतवाद कई दशकों से भूगोल में स्वीकार एवं प्रचलित हो रहा है। इसके उपयुक्त विश्लेषण के लिए ऐतिहासिक संदर्भ में इसके विकास को देखना उचित है। जहाँ तक भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल के द्वैतवाद का संबंध है, संभवत: यूनानी प्रथम थे जिन्होंने विषय का इस प्रकार विभाजन प्रारम्भ किया था। हैकेटियस भौतिक भूगोल पर अधिक जोर देता था, जबकि हेरोडोटस एवं स्ट्रेबो का मानवीय पक्ष से अधिक लगाव था। वारेनियस (1622-1650) ने अपनी पुस्तक सामान्य भूगोल (Geographic Generalies) में सर्वप्रथम भौतिक एवं मानवीय भूगोल के बीच अन्तर को स्पष्ट किया।

2.2 भूगोल में द्वैतवाद : भौतिक बनाम मानव (Dualism in Geography : Physical Vrs. Human)

भूगोलवेत्ता, विषय के समस्त इतिहास काल में क्रियात्मक पद्धति (Methodological) द्वैतवाद और द्वैधता (Daulism and Dicotomies) जैसी समस्याओं का सामना करते रहे हैं। भूगोल के क्षेत्र और क्रिया पद्धति के सीमांकन के अध्ययन के लिए किस प्रकार की पद्धति अपनाई जाए, इसके लिए महत्त्वपूर्ण द्वैध ताएँ रही हैं और आज भी है। जैसे व्यवस्थित (Systematic) बनाम प्रादेशिक भूगोल, भौतिक बनाम मानव भूगोल और निश्चयवादी बनाम संभववादी भूगोल। द्वैतवाद यद्यपि भूर्गोल के लिए नया नहीं है, यह सभी विषयों में किसी-न-किसी रूप में विद्यमान रहा है। भूगोल के पूर्व-इतिहास काल में अस्पष्ट और अस्थिर द्वैतवाद, यूनानी, रोमन और अरब भूगोलवेत्ताओं के लेखों में पाया जा सकता है। हेरोडोटस ने उस समय की प्रमुख जातियों, राष्ट्रजनों और उनकी भौतिक प्रवृत्ति का वर्णन किया था, स्ट्रेबो ने प्रादेशिक वर्णन पर अपने को केन्द्रित रखा था, जबकि टालेमी ने गणितीय भूगोल पर बल दिया था। हिप्पोक्रेटस, अरस्तु, जेनोफेन, आयभट्ट (सूर्य सिद्धान्त) अल-मसूदी और इब्न खाल्दून विद्वानों ने भौतिक पर्यावरण का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, इसकी व्याख्या की थी।

भूगोल में द्वैतवाद की विचारधारा, पुनर्जागरण काल के उत्तरार्द्ध में यूरोप में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उस समय से भूगोल स्पष्ट रूप से कई शाखाओं में विभाजित दिखाई देता है। यह द्वैधताएँ अथवा शाखाओं में विषय का विभाजन तर्कसंगत दिखाई देता है। उनमें से कुछ द्वैधताएँ निम्नलिखित हैं :

(i) सामान्य भूगोल बनाम प्रादेशिक भूगोल

(ii) भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल

(iii) निश्चयवादी बनाम सम्भववादी भूगोल

(iv) ऐतिहासिक भूगोल बनाम समकालीन भूगोल

(v) सैद्धांतिक बनाम व्यावहारिक भूगोल

इसके अतिरिक्त भूगोल का विभाजन अलग-अलग शाखाओं जैसे, भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, जल विज्ञान कृषि भूमि उपयोग और जनसंख्या भूगोल में किया गया है।

इस अध्याय में हमलोगों को भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल का अध्ययन करना है, आइए इसे आगे देखते हैं कि भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल क्या है?

जहाँ तक भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल के द्वैधवाद का संबंध है संभवत: यूनानी प्रथम थे जिन्होंने विषय का इस प्रकार विभाजन प्रारंभ किया था। हिकेटियस भौतिक भूगोल को अधिक महत्त्व (Weightage) देता था, जबकि हेरोडोटस और स्ट्रेबो मानव पक्ष पर अधिक बल देते थे। भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल का यह द्वैतवाद आज भी विषय की विशेषता बनी हुई है। कुछ लेखकों ने इसे भूगोल की भूमिका के लिए वास्तविक औचित्य माना, जबकि अन्य ने तर्क द्वारा विषय को भौतिक भूगोल और मानव भूगोल में विभाजित किया, इस आधार पर कि दोनों की क्रिया पद्धतियाँ अलग होनी चाहिए। प्राकृतिक तथ्यों जिनमें जलवायु विज्ञान, मौसम विज्ञान, जैव विज्ञान, समुद्र विज्ञान, भू-गर्भ विज्ञान तथा

भू-आकृतियाँ शामिल किए जाते हैं, यह संभव है कि प्राकृतिक विज्ञानों की क्रिया पद्धति का उपयोग किया जा सकता है और अधिक वैज्ञानिक परिशुद्धता से निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। प्राकृतिक विज्ञानों (Natural Sciences) की पद्धतियाँ सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों पर बहुत अच्छी प्रकार से लागू नहीं की जा सकती है। मानव समूहों के बारे में हमारे सामान्यीकरण समय और क्षेत्र में सीमित हेाते हैं और निश्चितता की अपेक्षा संभावनाओं के कथनों से अधिक संबंध रहता है। वारेनियस (1622-1650) में सर्वप्रथम भौतिक एवं मानवीय भूगोल के बीच के अन्तर को स्पष्ट किया। अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में इमेनुअल कान्ट ने कोनिगसबर्ग (जर्मनी) विश्वविद्यालय में भौतिक भूगोल पर भाषण दिया। उसने पृथ्वी के परिभ्रमण के परिणामस्वरूप पवन की दिशा विचलन का अध्ययन किया था। हम्बोल्ट जिसे महान बहुश्रुतों (Polymath) में से अन्तिम माना जाता है, प्राथमिक दृष्टि से उसकी भौतिक भूगोल में रूचि थी। इसके विपरीत कार्ल रिटर, बर्लिन विश्वविद्यालय में भूगोल विषय का प्रथम प्राध्यापक था। उनका झुकाव मानव भूगोल की ओर था। हम्बोल्ट और रिटर का विश्वास था कि भौतिक भूगोल के अनुसंधान का चरम लक्ष्य प्रकृति की एकता को स्पष्ट करना है।

रैकलस (Reclus) (1830-1905) ने व्यवस्थित भौतिक भूगोल जिसको उसने ला टेरे (La Tere) नाम दिया था, पर बल दिया। रैकलेस के पश्चात् डार्विन ने संघर्ष और जीवितता की संकल्पना अभिग्रहित करते हुए विषय के भौतिक पक्ष को महत्त्व दिया था। इन परिस्थितियों में मारे सोमरविल (Mare Sommerville) ने 1848 में भौतिक भूगोल की पुस्तक प्रकाशित की। बाद में उन्नीसवीं शताब्दी के भूगोलवेत्ताओं ने अपना संबंध भौतिक भूगोल से अधिकाधिक रखा। भू-आकृति विज्ञान शब्द का उपयोग सर्वप्रथम एलबर्ट पैक (Pack) ने किया था जो स्वयं एक भू-गर्भशास्त्री था। विस्तृत क्षेत्र कार्य करने के बाद उन्होंने ''भू-आकृति विकास'' के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया और यह प्रदर्शित किया कि किस प्रकार आकारों का व्यवस्थित अध्ययन, क्षेत्रीय अध्ययन (प्रादेशिक) की दृष्टि से किया जा सकता है। उन्होंने उच्चावच मानचित्रों का भूगोल के व्यवस्थित अध्ययन में महत्त्व पर बल दिया। बाद में कॉपेनर (Koeppen), विलियम मोरिस डेविस (William Morris Davis), डी मार्तोने, मिल (Mill), जैफरसन (Jaferson) और डोंकुश्चेव ने भू-आकारों और जलवायु को भूगोल का मुख्य अंग माना था। उपर्युक्त सभी अध्ययन में मानवीय प्रभाव के अध्ययन की घोर उपेक्षा हुई।

इसी समय विलियम मॉरिस डेविस ने सामान्य अपरदन चक्र के विचार को प्रस्तुत किया। रेटजेल और सेम्पल ने भी भौतिक वातावरण पर विशेष बल दिया जिससे मानव जीवन पद्धति प्रभावित होता है। सेम्पुल (Semple) ने तो यहाँ तक कह दिया कि मानव प्रकृति की उपज है। हंटिगटन (Huntington) ने सभ्यताओं की प्रगति और उनके स्थानों में परिवर्तन का कारण जलवायु और मौसम की अवस्थाएँ बताया। मेकिण्डर (Mackinder), चिशोल्म और हर्बर्टसन (Herbertson) ने भी भौतिक भूगोल को भूगोल का मुख्य क्षेत्र माना। थॉमस हेनरी हक्सले (T.H. Huxley) ने 1877 ई० में 'स्थलाकृति विज्ञान (Physiography) की रचना की।

19वीं शताब्दी के अन्तिम 30 वर्षों में भौतिक भूगोल सभी स्कूलों में मुख्य विषय माना जाता था। सोवियत भूगोलवेत्ताओं ने भी भूगोल के अन्तर्गत भू-आकृति विज्ञान (Geomorphology), मृदा विज्ञान (Pedology) और मौसम विज्ञान (Meteorology) भौतिक भूगोल पर बल दिया। इस दौरान भौतिक भूगोल

की लोकप्रियता को इस बात से आंका जा सकता है कि अनेक भौतिक भूगोलवेत्ताओं में भूगोल के अध्ययन में सिर्फ इसे ही शामिल करने को उचित ठहराया।

भौतिक भूगोल (Physical Geography) बनाम मानव भूगोल (Human Geography) की द्वैधता को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता है जब तक कि मानव भूगोल के इतिहास पर प्रकाशन डाला जाये।

रिटर (Ritter) और रेटजेल (Ratzel) संभवत: प्रथम भूगोलवेत्ताओं में से एक थे जिन्होंने मानव को एक अभिकर्ता (Agent) माना जो स्थलाकृति में परिवर्तन लाता है। फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता विडाल-डी-ला-ब्लास (Vidal De La Blache) ने मानव भूगोल (Human Geography) की स्थापना की। ब्लास और उनके शिष्यों ने मानव भूगोल पर अनेक कार्य किये तथा सांस्कृतिक भूदृश्यों के निर्माण में भौतिक भूदृश्य की भूमिका को कम करके आँका। वह भौतिक भूगोल तथा निश्चयवादी दृष्टिकोण की कमजोरियों को अच्छी तरह जानते थे तथा उन्होंने अपने अध्ययन के द्वारा उसे उजागर भी किया। ब्लास (Blache) ने भौतिक तथासांस्कृतिक तत्त्वों के बीच कोई विभाजक रेखा न मानकर उसे संयुक्त माना।

जीन ब्रुन्श (Jean Brunes) और डिमाजिया (Demangeon) ने ब्लाश (Blache) की परम्परा को मानते हुए मानव भूगोल को भूगोल का आभ्यांतर (Core) बताया। अमेरिकी भूगोलवेत्ता मार्क जैफर्सन (Mark Jefferson) ने ''केन्द्रीय स्थान'' (Central Place), ''प्रमुख नगर'' (Primate city) और ''रेलों द्वारा सभ्यता का प्रचार'' (Civilizing Rails) के क्षेत्र में स्थापित किया। सोवियत संघ में भी. एन. अनुचिन (V.A. Anuchin) ने ''आर्थिक निश्चयवाद'' (Economic Determinism) के सिद्धान्त का अनुसरण किया।

उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट होता है कि भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल की द्वैधता अध्ययन की सुविधा तथा विशेषीकरण के दृष्टिकोण को अपनाने के कारण हुआ है। दो स्वतंत्र विषय के रूप में इनका अध्ययन किसी क्षेत्र का एकांकी या अपूर्ण विवरण ही प्रस्तुत करेगा, जिसे निम्नलिखित उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है-

(1) खनिज पदार्थों का निर्माण प्राकृतिक शक्तियों एवं प्रक्रियाओं के द्वारा होता है, परन्तु खनिज संपदा का प्रयोग करने का संबंध मानवीय अर्थव्यवस्था से होता है। खनिजों का प्रभाव मानवीय समाज व्यवस्था, संस्कृति, राजनीतिक व्यवहार आदि पर होता है। किसी खनिज संपदा को खोदकर प्रयोग किया जाय या नहीं, कितनी मात्रा में की जाये, किस विधि से किया जाये, इत्यादि बातें मानवीय इच्छा (choice) और टेक्नोलॉजी पर निर्भर करती है। अत: खनिज पदार्थ के अध्ययन में मानवीय पक्ष का अध्ययन भी आवश्यक है।

(2) पुन: समुद्रों और महासागरों के अध्ययन में केवल ज्वार भाटों, समुद्री लहरों और समुद्री निक्षेपों को ही अध्ययन नहीं होता, वरन् मानवीय क्रियाओं जैसे मत्स्य उद्योग, नौ परिवहन आदि का भी अध्ययन होता है।

वस्तु स्थिति यह है कि भौतिक तथा मानवीय तत्त्वों की अन्तर्क्रिया के फलस्वरूप किसी क्षेत्र का एक विशिष्ट व्यक्तित्व उमड़कर सामने आता है जो भौतिक तथा मानवीय कारकों का प्रतिफलन होता है। वस्तुत: भौतिक एवं मानवीय भूगोल सातत्यक (Continum) के दो छोर है। हाटशोर्न (Hartshorne) ने यह तर्क दिया है कि यदि हम भूगोल को भौतिक और मानव तथ्यों में विभाजित करें तो हम शेष कार्य को अतार्किक बना देते हैं।

इस प्रकार हम भौतिक घटकों का मानव पर और मानव की क्रियाओं का भूमि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हैं न कि शारीरिक कारकों का। इस प्रकार भौतिक और मानव भूगोल में विभाजन भूगोल का आंशिक अध्ययन है। वास्तव में विभाजन भूगोलवेत्ता यह स्वीकार करते हैं कि हम मानव के चयन और क्रियाओं की संभवत: प्राकृतिक पर्यावरण के संबंध के संदर्भ में व्याख्या नहीं करते हैं। फ्रेब्रे (Febvre) महोदय ने भूगोल के महत्त्व के लिए भौतिक और मानव तथ्यों के बीच की दरार दूर करने की सलाह दी। हरबर्टसन (Herbertson) ने तो यहाँ तक कह दिया कि-''भूगोल रूपी सजीव इकाई को दो अर्द्धकों में बाँटना उसकी हत्या करना है, अत: यह एक हत्यारे जैसा कार्य (Murderous Act) है।''

2.3 सारांश (Summing-up)

जहाँ तक भौतिक बनाम मानव भूगोल के द्वैतवाद का संबंध है, संभवत: यूनानी प्रथम थे जिन्होंने विषय का इस प्रकार विभाजन किया था। हैकेटियस ने भौतिक भूगोल जबकि हेरोडोटस एवं स्ट्रेबो ने मानवीय पक्ष पर अधिक जोर दिया। वारेनियस (1622-50) प्रथम भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने अपनी पुस्तक 'सामान्य भूगोल (Geographic Generalis) में सर्वप्रथम भौतिक भूगोल (Physical Geography) और मानव भूगोल (Human Geography) के बीच अन्तर को बताया।

भौतिक भूगोल के अन्तर्गत स्थलमण्डल (Lithosphere), जलमण्डल (Hydrosphere), वायुमण्डल (Atmosphere) और जैव मण्डल (Biosphere) का अध्ययन किया जाता है। किन्तु वास्तव में देखा जाय तो स्थल मण्डल, वायुमण्डल, जलमण्डल एक-दूसरे से अलग नहीं है, ये सभी किसी-न-किसी रूप में एक-दूसरे से संबंधित हैं। भौतिक भूगोल के समर्थकों में इमेनुअल काण्ट, हम्बोल्ट, रैकलस, सोमर विले, कॉपेन, विलियम मोरिस डेविस, मार्तोने, मिल, जैफरसन, सैम्पुल, हंटिंगटन, मेकिण्डर, थामस हेनरी हक्सले, चिशोल्म आदि ने भौतिक भूगोल को भूगोल का मुख्य क्षेत्र माना।

जबकि रिटर (Ritter), Ratzel, विडाल-डी-लॉ ब्लाश (Vidal de la Blashe) ने मानव भूगोल की स्थापना की और मानव को एक अभिकर्त्ता (Agent) माना जो स्थलाकृति में परिवर्तन लाता है।

मानव भूगोल के अंतर्गत मानवीय क्रियाओं में मानव वर्गों की अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था, संस्कृतियों आदि का विश्लेषण होता है।

इन सभी तथ्यों का अध्ययन मानव भूगोल के विभिन्न शाखा जैसे :- Economic Geography, Population Geography, Social and Cultural Geography, Political Geography and settlement Geography के अन्तर्गत किया जाताा है। किन्तु ये सभी उपविभाग (शाखा) एक-दूसरे से अलग नहीं होते हैं, बल्कि आपस में अन्तर्संबंधित होते हैं तथा सभी उप-विभागों के तत्त्व एक-दूसरे के पूरक होते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर भूगोल की द्वैतता हुई जिसमें भूगोल के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भौतिक एवं मानवीय पक्षों में बाँटकर किया जाता है, जिसके अन्तर्गत पृथ्वी पर स्थित संबंधों का अध्ययन किया जाता है। ये संबंध मानवीय तथा अमानवीय दोनों होते हैं। साथ ही भूगोल का उद्देश्य न केवल स्थल मण्डल, जलमण्डल, वायुमण्डल और जैव-मंडल का अध्ययन करना ही नहीं, बल्कि मानव की क्रियाएँ भी उसमें शामिल होती हैं जिसके अन्तर्गत मानव द्वारा निर्मित खेत, गाँव, नगर, खाने, कारखाने एवं फैक्ट्रियों की प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था इत्यादि सम्मिलित होते हैं। ये

सभी परस्पर एक-दूसरे से संबंधित होते हैं। अत: भूगोल में भौतिक और मानवीय दोनों पक्षों के अध्ययन को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। दोनों सातत्यक (continum) के दो छोर हैं।

हरबर्टसन (Herbertson) महोदय ने तो यहाँ तक कहा कि-"भूगोल रूपी सजीव इकाई को दो अर्द्धकों में बाँटना उसकी हत्या करना है, अत: यह एक हत्यारे जैसा कार्य (Murderous Act) है।"

2.4 मॉडल प्रश्न (Model Question)

Q.1. भूगोल में द्वैतवाद या द्वैधता से क्या अभिप्राय है? इस विज्ञान के विभिन्न प्रकार के द्वैतवादों का सेट बतावें।

Q.2. भौतिक एवं मानव भूगोल के मध्य बहुचर्चित द्वैधता कहाँ तक उचित एवं न्यायसंगत है? उदाहरण सहित इसे स्पष्ट करें।

2.5 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Evolution of Geographical Thought : Husain, M.
2. Fundamentals of Geographical Thought : Sudeepta Adhikari
3. भौगोलिक विचारधारा का इतिहास : माजिद हुसैन
4. भौगोलिक चिंतन का स्वरूप : जैव
5. भौगोलिक चिंतन : एस० डी० कौसिक।

●●●

भूगोल में द्वैतवाद : क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक
(Dualism in Geography : Systematic vrs. Regional)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

3.0 उद्देश्य (Objective)

3.1 परिचय (Introduction)

3.2 क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल (Systematic vrs. Regional Geography)

3.3 सारांश (Summing up)

3.4 पारिभाषिक शब्द (Key Words)

3.5 मॉडल प्रश्न (Model Question)

3.6 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

3.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य विद्यार्थियों को क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल की जानकारी देनी है।

3.1 परिचय (Introduction)

भूगोल का अध्ययन प्राचीन काल से होता आ रहा है और इसमें मानव एवं प्रकृति के बीच की अन्तर्क्रियाओं का अध्ययन किया जाता रहा है। इस लक्ष्य को पाने हेतु भूगोलवेत्ता अनेक विधितंत्रों (Methodology) एवं उपकरणों (Tools) का प्रयोग करते आये हैं। विभिन्न स्थानिक परिघटनाओं के अध्ययन के दौरान भौगोलिक के बीच के अन्तर को लेकर है। क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल की द्वैतता इसी में से एक है।

जैसा कि आपलोग पहले के अध्याय में जान चुके हैं कि यह द्वैतवादी दृष्टिकोण नया नहीं है। आरंभिक ग्रीक एवं रोमन भूगोलवेत्ताओं को यह विश्वास था कि भूगोलवेत्ताओं का कार्य विभिन्न देशों से मुख्य रूप से प्राप्त सूचनाओं का संगठन है जबकि उनमें से कुछ पृथ्वी का मापन तथा विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के बीच के अन्तर को जानना चाहते थे।

3.2 क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल (Systematic Vs. Regional)

17वीं शताब्दी के मध्य में भूगोल में द्वैतवाद के जन्मदाता वर्नहार्ड वारेनियस (Bernhard Varenius) ने सामान्य भूगोल (General Geography) को परिभाषित करते हुए उसे भूगोल का वह भाग बताया जिसमें सामान्य रूप से पृथ्वी का वह भाग बताया जिसमें सामान्य रूप से पृथ्वी का अध्ययन होता है तथा

उसके विभिन्न वर्गों एवं परिघटनाओं का वर्णन किया जाता है जो उसे सम्मिलित रूप से प्रभावित करते हैं। अर्थात् सामान्य भूगोल सामान्य नियमों, सिद्धान्तों, जनक संकल्पनाओं के निर्माण से संबंधित है।

इस प्रकार, सामान्य भूगोल, भूगोल को आधार तथा सामान्य नियम (General law) प्रदान करता है जिसका अनुप्रयोग किसी क्षेत्र या देश के अध्ययन में होता है जिसे 'विशेष भूगोल (Special Geography) कहते हैं। इस प्रकार सामान्य बनाम विशेष अथवा क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल का अभ्युदय हुआ। वारेनियस मुख्य रूप से कुछ सामान्य नियमों, सिद्धान्तों एवं जातिगत संकल्पना (Generic Concept) को विकसित करना चाहता था जो भूगोल के विकास का प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन है। क्रमिक रूप से इस प्रकार के सभी सामान्यीकृत अध्ययन को 'क्रमबद्ध भूगोल' (Sustematic Geography) की संज्ञा दी गई जबकि विशेष भूगोल को 'प्रादेशिक भूगोल' (Regional Geography) कहा गया।

'क्रमबद्ध (Systematic) भूगोल को 'प्रकरण (Topical) भूगोल भी कहा जाता है। इसमें भूतल पर विकसित एवं विकासशील तत्त्वों का प्रकरणवार (Topic Wise) अध्ययन किया जाता है।

हार्टशोन (Hartshorne) के अनुसार सामान्यत: क्रमबद्ध, व्यवस्थित (Systematic) या प्रकरण (Topic) भूगोल में विश्वव्यापी (वृहत व्यापी) तत्त्व विशेष के लक्षण, उनकी उत्पत्ति व विकास की प्रक्रिया एवं विवरण को समझाया जाता है। इसके अन्तर्गत स्थल, जल एवं वायुमण्ल, उनके तत्त्व एवं स्वयं मानव द्वारा भूमण्डल पर विकसित तत्त्वों-कृषि, यातायात मार्ग, विशिष्ट प्रकार की बस्ती क्रम आदि या उनकी किसी विशेष इकाई को उपर्युक्त प्रकार से समझाया जाता है। इस प्रकार क्रमबद्ध भूगोल में जिस विधि से अध्ययन किया जाता है, उसका वर्गीकृत विज्ञान से भी निकट संबंध है, जो एक व्यापक एवं जेनेटिक संकल्पना (Genetic Concept) की खोज की और अग्रसर हुआ। दूसरी ोर प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography) में समस्त पृथ्वी तल का एक साथ अध्ययन करने के बजाय उसे भौगोलिक अध्ययन के लिए प्रदेशों में किया जाता है। प्रादेशिक संकल्पना एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा भूतल पर समानताओं और विभिन्नताओं को समझा जा सकता है।

भौगोलिक प्रदेश को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि भौगोलिक प्रदेश वह क्षेत्र होता है जिसमें एक प्रकार की आंतरिक समानता पायी जाती है, जो इस क्षेत्र का दूसरे समीपवर्ती क्षेत्रों से भेद स्पष्ट करता है। किसी प्रदेश के स्पष्ट लक्षण उसके दृश्यांशों की समानता में अथवा जलवायु और वनस्पति की समानता अथवा वहाँ कि निवासियों की जीवन शैली की समानता में प्रकट होते हैं। उदाहरणार्थ, मानसूनी प्रदेश के वे क्षेत्र जिसमें ग्रीष्मकालीन वर्षा पवनों के द्वारा होती है और तापमान इतना ऊँचा रहता है कि वर्षा में कम-से-कम दो फसलें उत्पन्न की जा सकती हैं। भारत, बाँग्लादेश, पाकिस्तान, म्यानमार, वियतनाम, दक्षिणी-पूर्वी चीन, जापान आदि मानसूनी प्रदेश के अच्छे उदाहरण हैं। यहाँ जलवायविक समानता के साथ-साथ कृषि उत्पादन की समानता भी पायी जाती है। ये देश चावल उत्पादक हैं।

संक्षेप में, सामान्य भूगोल विश्व का एक इकाई के रूप में अध्ययन करता है। इसे भौतिक भूगोल तक सीमित रखा गया ताकि प्राकृतिक नियमों को समझा जा सके। इसके विपरीत, विशेष भूगोल के अन्तर्गत मुख्यत: विशेष देशों और विश्व प्रदेशों का वर्णन किया जाता है। विशेष भूगोल में किसी नियम को विकसित करना कठिन होता है, क्योंकि इसमें मानव को सम्मिलित किया जाता है जिसका व्यवहार अपूर्वानुमानित होता है। काण्ट (Kant) एवं हम्बोल्ड (Humboldt) ने सामान्य भूगोल के स्थान पर भौतिक

भूगोल शब्दावली का उपयोग किया। हेम्बोल्ड (Humboldt) ने अपनी पुस्तक 'COSMOS' में विभिन्नता में एकता के विचार पर बल दिया है।

इस प्रकार, एक तार्किक प्रक्रिया का जन्म हुआ जिसमें प्रकृति के किसी एक तथ्य को आधार बनाने की जगह सभी सामान्य तथ्यों को आधार बनाया गया जिससे प्रकृति बनी है तथा जो प्रकृति का सार है। किन्तु कार्ल रिटर (Corl Ritter) बहुत हद तक प्रादेशिक भूगोल में विश्वास करता था। रियथोपेन के अनुसार, भूगोल का उद्देश्य विविधतापूर्ण परिघटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है जो पृथ्वी के धरातल पर अन्तर्संबंधों के रूप में मिलते हैं। उसने प्रदेश विशेष के भौतिक विन्यास के तत्वों की व्याख्या तथा उस विन्यास में मानव के समायोजन के अध्ययन पर बल दिया। दूसरे शब्दों में प्रादेशिक भूगोल में प्रदेश के विशिष्ट लक्षणों को उजागर करने के लिए उसे वर्णनात्मक होना चाहिए। इसके अतिरिक्त परिकल्पना के निर्माण और अवलोकित विशिष्टताओं के परीक्षण के लिए उसे घटनाओं की नियमितताओं और उद्‌भूत लक्षणों के प्रतिरूपों को देखने का प्रयास करना चाहिए। रिचथोपेन (Richthopen) के अनुसार, सामान्य भूगोल में व्यक्तिगत तथ्यों के स्थानिक वितरण का अध्ययन होता है। रेटजेल (Retzel) ने अपने मानवीय अध्ययन में निगमनात्मक विधि को अपनाया। उसने कुछ पूर्व मान्यताओं को आधार बनाकर सिद्धान्त दिये तथा उसे विशिष्ट परिस्थिति में लागू किया।

हैटनर (Hetner) ने भूगोल की परिभाषा देते हुए से सामान्य भूगोल की जगह प्रादेशिक भूगोल बताया। फ्रांस में ब्लॉश (Blache) ने भूगोल के अध्ययन में प्रादेशिक अध्ययन पर बल दिया। उन्होंने प्रादेशिक अध्ययन के लिए एक विशिष्ट इकाई को चुना जिसे पेज (Pays) कहा। उनके अनुसार, किसी क्षेत्र विशेष में लम्बे समय तक मानव तथा प्रकृति की अंतर्क्रिया के फलस्वरूप एक विशिष्ट संबंध विकसित होता है। इसलिए उन्होंने क्रमबद्ध अध्ययन के विरुद्ध प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन पर जोर दिया। इस अध्ययन के लिए वे आगमनात्मक विधि (Inductive approach) को श्रेष्ठ मानते थे। इस द्वैतवाद के विकास का उद्देश्य पृथ्वी पर फैले विविध जब्लितापूर्ण परिघटनाओं को समझना एवं उसका एकीकरण तथा अन्तर्सम्बन्ध है। इस प्रकार इस प्रयास में क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल एक-दूसरे से भिन्न न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं।

क्षेत्रीय भूगोल के अध्ययन के लिए क्रमबद्ध (Systematic) अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि क्रमबद्ध भूगोल के द्वारा सिद्धान्तों की रचना होती है, जबकि प्रादेशिक भूगोल में उसका व्यवहार होता ह। इस प्रकार क्रमबद्ध भूगोल मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक है जिसमें सामान्य अवधारणाओं का प्रयोग होता है। जबकि प्रादेशिक भूगोल आवश्यक रूप से संश्लिष्ट दृष्टिकोण अपनाता है जिसमें विशिष्ट अवस्थाओं एवं लक्षणों का अध्ययन होता है। इसके अतिरिक्त क्रमबद्ध भूगोल में संपूर्ण विश्व का एक इकाई के रूप में अध्ययन होता है। जैसे-यदि वर्षा, तापमान, मिट्टी या वनस्पति में से किसी एक कारक को लेकर यदिविश्व स्तर पर उसका अध्ययन किया जाय तो वह क्रमबद्ध भूगोल होगा। पुनः यदि इन कारकों को सम्मिलित रूप से किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में अध्ययन किया जाये तो वह प्रादेशिक भूगोल होगा।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल भौगोलिक अध्ययन का दो भिन्न तरीका है। भौगोलिक अध्ययन में दोनों ही विधियाँ प्रयुक्त होती हैं। किसी एक विधि को श्रेष्ठ बताना उचित नहीं है। B.J.L.Berry ने ठीक कहा है कि प्रादेशिक और क्रमबद्ध भूगोल अलग-अलग पद्धतियाँ न होकर

सांतत्यक (continum) के दो सिरे हैं जिसकी तलना त्रि विभीय साँचे-पृथ्वी, सामाजिक और ज्यामिति से की जा सकती है।

प्रमुख प्रादेशिक भूगोलवेत्ता हेटनर (Hettner) ने बताया है कि क्रमबद्ध भूगोल में विसित संकल्पनाएँ प्रादेशिक भूगोल के विकास के लिए आवश्यक है। संक्षेप में, क्रमबद्ध भूगोल को प्रादेशिक भूगोल रूपी वृक्ष का आधार एवं जड़वाला भाग कह सकते हैं अर्थात् एक के बिना दूसरे का विकास नहीं हो सकता। बिना क्रमबद्ध भूगोल के प्रादेशिक भूगोल अधूरा है एवं बिना प्रादेशिक भूगोल के क्रमबद्ध भूगोल की घटनाओं के व्यावहारिक पक्ष को नहीं समझा जा सकता। अत: दोनों की द्वैतता का लक्षण उनकी एकरूपता में निहित है। भूगोल के विकास के हित में क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल को विषय के दो अर्धक (Two halves) नहीं मानकर प्रत्येक को भूगोल का प्रधान अर्द्धांग माना जाना चाहिए। ये दोनों ही वास्तव में विषय के अध्ययन की दो विधियाँ हैं। प्रादेशिक अध्ययन में क्षेत्र की सीमा निश्चित रहती है। परन्तु उसकी तत्त्व-जटिलताएँ गतिशील एवं बहुस्तरीय होती हैं। पुन: क्रमबद्ध भूगोल में घटनाओं का क्षेत्र सम्पूर्ण भूमण्डल होता है, परन्तु इसमें अध्ययन के तत्त्व सीमित रहते हैं।

3.3 सारांश (Summing-up)

17वीं शताब्दी के मध्य में सर्वप्रथम वनहार्ड वारेनियस (Bern Hard Varenius) ने द्वैतवाद का वर्णन किया था, जिसे उन्होंने 'General geography और 'Special Systematic geography' (क्रमबद्ध भूगोल) और विशेष भूगोल (प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography) कहलाया। क्रमबद्ध भूगोल में जहाँ भूगोल के विभिन्न प्रकरणों का प्रादेशिक अध्ययन होता है, वहीं प्रादेशिक भूगोल में प्रदेश विशेष में भूगोल के विभिन्न प्रकरणों का क्रमबद्ध अध्ययन होता है। अतएव इन दोनों के मध्य द्वैतता नहीं अन्तसंबंध है एवं दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भूगोल के ये दोनों ही उपागम एक-दूसरे के लिए अत्यंत ही आवश्यक हैं या अगर हम यह कहें कि ये दोनों ही एक-दूसरे में समाये हुए हैं, जिसके कारण अन्य विज्ञानों का भी विज्ञान में समाकलन होता है, तो कोई अतिरंजना नहीं होगा। भूगोल के इन दोनों ही उपागमों के संतुलित विकास के अभाव में भूगोल की विभिन्न शाखायें विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में प्रविष्ट हो जाती हैं, जैसे-भ्वाकृति भूगोल भूगर्भ शास्त्र का अंग हो जाता है। इसे हम इस तरह भी कह सकते हैं कि क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल के अन्तर्संबंधों से ही भूगोल की विभिन्न शाखाओं का जन्म होता है।

अन्तत: हम यह कह सकते हैं कि क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल एक-दूसरे के पूरक हैं। भूगोल के पूर्ण विकास में ये दोनों अलग-अलग नहीं किये जा सकते।

3.4 पारिभाषिक शब्द (Key words)

(i) आगमनात्मक प्रणाली/आगमन : (Inductive Method or Indution) :—विभिन्न पर्यवेक्षित, प्रत्यक्ष अथवा अनुभूत तथ्यों के आधार पर सामान्य निष्कर्ष का प्रतिपादन। अध्ययन की इस विधि को आगमन या आगमनात्मक प्रणाली (Inductive Method) कहते हैं।

(ii) निगमनात्मक उपागम या निगमन प्रणाली (Deductive Approach or Deduction Method) :—